ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा-846004

Head
University Department of Political Science

के अंतर्गत पी-एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रस्ताव की रूपरेखा राजनीति विज्ञान विभाग सामाजिक विज्ञान संकाय

**शोध शीर्षक- उत्तर प्रदेश में राजनीतिक प्रक्रिया, जाति एवं सामाजिक न्याय: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन(2007-2022)**

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 मनोज कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर

विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग,

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी

दिनेश कुमार

PAT ROLL No- E2216007

Class Roll- 29

शोध शीर्षक- उत्तर प्रदेश में राजनीतिक प्रक्रिया जाति एवं सामाजिक न्याय: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन(2007-2022)

समस्या का कथन -

"उत्तर प्रदेश, जो भारत के सबसे बड़े और जनसांख्यिकीय रूप से विविधतापूर्ण राज्यों में से एक है, लंबे समय से जातीय राजनीति और सामाजिक न्याय के मुद्दों का केंद्र रहा है। बहुजन समाज पार्टी ,समाजवादी पार्टी , भारतीय जनता पार्टी जैसे राजनीतिक दलों ने इस राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य में विभिन्न जातीय और सामाजिक समूहों को आकर्षित करते हुए और उनके हितों का दावा करते हुए प्रमुख भूमिकाएँ निभाई। इस संदर्भ में, यह आवश्यक है कि इन राजनीतिक दलों की नीतियों और प्रयासों का मूल्यांकन किया जाए, खासकर जब ये नीतियाँ और प्रयास जातीय राजनीति और सामाजिक न्याय से संबंधित हैं। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह पहचानना है कि प्रमुख राजनीतिक दलों की नीतियाँ और प्रभाव उत्तर प्रदेश के विशिष्ट सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में कैसे विकसित हुए हैं, और इन नीतियों का सामाजिक न्याय और जाति व्यवस्था पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ा है। विश्लेषण से उम्मीद है कि यह स्पष्ट होगा कि कौन से नीतिगत उपाय प्रभावी रहे हैं और किन में सुधार की आवश्यकता है, इसके साथ ही इसे उत्तर प्रदेश में भविष्य के लिए जाति राजनीति और सामाजिक न्याय की नीतियों में सुधार और परिवर्तन के लिए सिफारिशें मिलेंगी।"

शोध प्रश्न :

1. उत्तर प्रदेश के प्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा प्रस्तावित नीतियाँ उत्तर प्रदेश में जातिगत और सामाजिक न्याय के मुद्दों को किस हद तक संबोधित करती हैं?

2. उत्तर प्रदेश के विशिष्ट सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में, BSP और SP की नीतियों ने समाज के विभिन्न जातीय समूहों को किस प्रकार प्रभावित किया है?

3. उत्तर प्रदेश के विभिन्न राजनीतिक दलों की सरकारों ने अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के लिए सामाजिक न्याय के संदर्भ में कौन से महत्वपूर्ण नीतियों को प्रभावी रूप से कार्यान्वित किया है?

4. 2007 से 2022 तक के कालावधि में उत्तर प्रदेश की राजनीति में जातिगत गतिशीलता एवं सामाजिक न्याय की नीतियों में किस प्रकार के परिवर्तन आए?

परिचय -

जाति भारतीय सामाजिक व्यवस्था का प्रमुख लक्षण है। भारतीय समाज व्यवस्था के अंतर्गत जाति का आशय उस सामाजिक समूह से होता है जिसकी सदस्यता का आधार उसी जाति में जन्म लेने से है। मूल रूप से एक सामाजिक समूह कुछ विशेष व्यवसाय से संबंधित होते हैं। एक जाति का दूसरे जाति समूह से संबंध कुल एवं

M. Kumar
15.4.24

Dinesh Kumar
15.04.24

रक्त की शुद्धता के आधार पर स्थापित होता है। डॉक्टर केतकर ने जाति की परिभाषा इस प्रकार की हैः दो लक्षणों वाला सामाजिक समूह (क) उसकी सदस्यता उन लोगों तक सीमित होती है जो जन्म से सदस्य होते हैं और जिनमें इस प्रकार जन्म लेने वाले लोग शामिल होते हैं।(ख) कठोर सामाजिक कानून द्वारा सदस्य अपनी जाति के बाहर विवाह करने के लिए वर्जित किए जाते हैं। राजनीति मनुष्य की स्वाभाविक गतिविधि है मनुष्यों की यह गतिविधि समाज के विभिन्न समूहों के माध्यम से व्यक्त होती है जैसे की हित समूहों तथा राजनीतिक दलों के माध्यम से। दूसरे शब्दों में, दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा की स्थिति में समाज के दुर्लभ संसाधनों पर अपना प्रभुत्व और नियंत्रण स्थापित करने के प्रयास को राजनीति की संज्ञा दी जाती है। स्वतंत्र भारत की सबसे प्रमुख समस्या यह थी कि किस प्रकार विविधताओं और विषमताओं से परिपूर्ण भारतीय समाज में सामाजिक न्याय की स्थापना की जाए? सामाजिक न्याय का आशय मानव कल्याण के उस सामाजिक दर्शन से है जो समाज के प्रत्येक स्तर पर उचित एवं न्यायपूर्ण व्यवस्था का समर्थन करता है जिससे समाज के प्रत्येक व्यक्ति, वर्ग एवं समूह के हितों की रक्षा एवं संवर्धन होता है। सामाजिक न्याय का सार समता का सिद्धांत है जो मानव जाति की मूलभूत एकता एवं बंधुत्व भावना पर आधारित है। सामाजिक न्याय इसी समता सिद्धांत का व्यावहारिक रूप है जो सामाजिक जीवन के विभिन्न रूपों चाहे वह सामाजिक हो या आर्थिक या राजनीतिक समग्र रूप से समानता में चरितार्थ होता है।

हमारे संविधान निर्माताओं का सबसे अहम उद्देश्य भारतीय समाज में सामाजिक न्याय की स्थापना थी। इसी उद्देश्य की प्राप्त के लिए भारतीय संविधान में महत्वपूर्ण उपबंध किए गए। संविधान के अनुच्छेद 38 के अनुसार राज्य ऐसी सामाजिक व्यवस्था की, जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुप्राणित करें, भरसक प्रभावी रूप से स्थापना और संरक्षण करके लोक कल्याण की वृद्धि का प्रयास करेगा। ग्रेनविल आस्टिन के अनुसार भारतीय संविधान सर्वप्रथम एक सामाजिक दस्तावेज है जिसके अधिकतर उपबंध सामाजिक क्रांति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निर्देशित है।

किसी भी लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत राजनीतिक दल उसके आधार का कार्य करते हैं, अर्थात लोकमत का निर्माण, चुनावी प्रक्रिया में भाग लेना, सरकार का निर्माण, शासन सत्ता को मर्यादित करना, राजनीतिक चेतना का प्रसार, जनता एवं शासन के बीच संबंध इत्यादि कार्य राजनीतिक दलों द्वारा किए जाते हैं। राजनीतिक दलों का मूल उद्देश्य राजनीतिक सत्ता को प्राप्त करना होता है । एक जनतांत्रिक शासन व्यवस्था में यह सत्ता चुनाव के माध्यम से प्राप्त होती है। चुनाव द्वारा सरकार का निर्माण तथा उसमें परिवर्तन होता है। इसलिए विभिन्न राजनीतिक दल राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए चुनाव में अधिक से अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। स्वतंत्र भारत में लोकतांत्रिक राजनीति की शुरुआत सन् 1952 के प्रथम आम चुनाव से होता है। वैसे तो भारत जैसे बहुजाजातीय,बहुसांस्कृतिक, बहुभाषाई, बहुलतावादी समाज वाले देश में चुनावी राजनीति को प्रभावित करने वाले कारकों में धर्म, भाषा, भ्रष्टाचार, आर्थिक एवं सामाजिक विकास के

M. Kumar
15.4.24

Dinesh Kumar
15.04.24

मुद्दे, धनबल एवं बाहुबल आदि प्रमुख कारक है। परंतु भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति को जिस कारक ने सर्वाधिक प्रभावित किया है वह है जाति राजनीति । जाति राजनीति का आशय राजनीतिक दलों के उस कार्य से है जिसमें वह चुनाव के दौरान टिकट आवंटन, चुनाव प्रचार के दौरान वोट मांगने एवं वोट बैंक सुरक्षित करने, चुनावों के पश्चात पद आवंटन एवं महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति में जातिवादी समीकरणों को ध्यान में रखते हैं। राजनीतिक दलों द्वारा मतदाताओं को इस प्रकार प्रभावित किया जाता है जिससे मतदाता अन्य मुद्दों के आधार पर वोट न देकर जाति के आधार पर वोट करते हैं।

भारत में आधुनिकीकरण के प्रारंभ होने के पश्चात सामान्य रूप से अवधारणा विकसित हुई कि पश्चिमी राजनीतिक तंत्र और जनतंत्रात्मक मूल्यों को अपनाने के फलस्वरूप भारतीय समाज से जातिवाद का अंत हो जाएगा। परंतु विगत सात दशकों के बाद भी राजनीतिक संस्थाओं की कार्य प्रणाली और सामान्य राजनीतिक जीवन के अनुभव से इस बात का संकेत मिलता है कि भारत की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर जातिवाद का प्रभाव विद्यमान है। जाति राजनीति के संबंध में प्रोफेसर रुडोल्फ का कहना है कि 'भारत के राजनीतिक लोकतंत्र के संबंध में जाति वह धुरी है जिसके माध्यम से नवीन मूल्यों एवं तरीकों की खोज की जा रही है। यथार्थ में यह एक ऐसा माध्यम बन गई है जिसके जरिए भारतीय जनता को लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रक्रिया से जोड़ा जा सकता है'। जाति व्यवस्था एवं राजनीति में अंतःक्रिया के संबंध में रजनी कोठारी का दृष्टिकोण यह है कि'जाति एवं राजनीति परस्पर अंतर्विरोधी नहीं है जो लोग राजनीति में जातिवाद की शिकायत करते हैं वे राजनीति एवं जाति के स्वरूप नहीं समझ पाए हैं क्योंकि भारत की जनता जातियों के आधार पर संगठित है अतः राजनीति को जाति संस्था का उपयोग करना ही होता है अर्थात राजनीति जाति से प्रभावित नहीं होती बल्कि जाति का राजनीतिकरण हो जाता है। स्पर्धात्मक राजनीति की गतिविधियों ने जाति को उसके अराजनीतिक संदर्भ से बाहर निकाल लिया है उसे एक नई हैसियत प्रदान की है। अब तक जिसे हम जाति प्रथा कहते थे उसका क्षय हो रहा है वह कुछ धीमी गति से यह घटना सामुदायिक और धार्मिक निष्ठाओं के साथ घट रही है। इसी प्रकार कुछ विद्वानों का मानना है की जाति राजनीति विविध जातियों एवं वर्गों में अलगाव एवं तनाव को जन्म दे रही है। जाति राजनीति के माध्यम से राजनीतिक दलों द्वारा मतदाताओं को विकास की राजनीति से दूर किया जाता है तथा भ्रष्टाचार, राजनीति में अपराधीकारण, सामुदायिक विकास जैसे मुद्दे चुनावी राजनीति के मुख्य मुद्दे नहीं बन पाते हैं इसके फलस्वरूप विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा अपने संकीर्ण राजनीतिक हितों की पूर्ति की जाती है।

भारतीय राजनीति में उत्तर प्रदेश का केंद्रीय महत्व रहा है। केवल इसलिए नहीं की उत्तर प्रदेश से सर्वाधिक लोकसभा एवं राज्यसभा के सदस्य चुने जाते हैं बल्कि इसलिए भी कि देश की संसदीय प्रणाली में उत्तर प्रदेश ने सर्वाधिक प्रधानमंत्री दिए हैं। यही कारण है कि उत्तर प्रदेश के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा जाता है कि केंद्र सरकार का रास्ता उत्तर प्रदेश से ही होकर जाता है। उत्तर प्रदेश देश का सबसे अधिक जनसंख्या वाला प्रदेश है। उत्तर प्रदेश की सामाजिक संरचना में लगभग 80% हिंदू, 18% मुस्लिम तथा बाकी बौद्ध, जैन, इसाई

M. Kumar
15.4.24

Dinesh Kumar
15.04.24

आदि निवास करते हैं। आजादी के बाद उत्तर प्रदेश का देश की राजनीति में केंद्रीय भूमिका रही है। 90 के दशक में भी उत्तर प्रदेश में विभिन्न जातियों के बीच सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थितियों में अत्यधिक विषमताएं विद्यमान थीं। अधिकतर उच्च जातियों की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी तथा पिछड़ी एवं दलित जातियां जिनकी जनसंख्या लगभग 80% थी, की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति निम्न थी। उत्तर प्रदेश की शक्ति संरचना में आरंभ के दो दशकों तक कांग्रेस पार्टी का एकाधिकार रहा जिसका नेतृत्व उच्च जातियों के हाथों में था तथा पिछड़ी एवं दलित जातियां शक्ति संरचना के दायरे से लगभग बाहर थी। धीरे-धीरे पिछड़ी एवं दलित जातियों को यह अनुभव होने लगा कि यदि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थितियों में परिवर्तन लाना है तो शासन सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। 1970 तथा 80 के दशक में पिछड़ी एवं दलित जातियों ने अपने आप को संगठित करना आरंभ किया। परिणामस्वरुप नए दल अस्तित्व में आए। सन् 1967 के विधानसभा चुनाव में राज्य की शासन सत्ता में कांग्रेस पार्टी का एकाधिकार समाप्त होने का संकेत मिला तथा पहली बार चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व में गैर कांग्रेसी सरकार अस्तित्व में आई । यह इस बात का संकेत था कि उत्तर प्रदेश में पिछड़ी एवं दलित जातियों में राजनीतिक महत्वाकांक्षा बढ़ रही है। डॉ राम मनोहर लोहिया, चौधरी चरण सिंह, कांशीराम, मुलायम सिंह यादव, मायावती तथा अखिलेश यादव जैसे अनेक नेताओं ने पिछड़े एवं दलित जातियों को राजनीति में नई हैसियत प्रदान की। डॉक्टर राम मनोहर लोहिया ने पिछड़ी जातियों को राजनीति में नई भूमिका प्रदान करने का प्रयास किया। उन्होंने सरकारी नौकरियों में पिछड़ी जातियों, अनुसूचित जाति - जनजाति तथा अल्पसंख्यक समुदायों को प्रतिनिधित्व देने के लिए आरक्षण प्रदान करने की वकालत की। कांशीराम का कहना था कि वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना तभी हो पाएगी जब पिछड़ों एवं दलितों का प्रतिनिधित्व सभी संस्थाओं में होगा। सन 1990 में केंद्र की बीपी सिंह के नेतृत्व वाली सरकार ने मंडल आयोग रिपोर्ट को लागू किया जिससे देश की सामाजिक, राजनीतिक जीवन में नए परिवर्तन की शुरुआत हुई। मंडल आयोग के रिपोर्ट के लागू होने के विरोध में उत्तर भारत के अनेक क्षेत्रों में हिंसक आंदोलन हुए। देश आरक्षण समर्थक एवं विरोधियों में बँट गया। सन् 1990 के बाद उत्तर प्रदेश की शासन सत्ता पर अधिकांश शासन समाजवादी पार्टी तथा बहुजन समाज पार्टी के हाथों में रहा है। यह स्पष्ट है कि दोनों पार्टियाँ पिछड़े एवं दलित जातियों का नेतृत्व करती है यह पार्टियों खुलकर जाति राजनीति कर रहे हैं। ये पार्टियाँ सामाजिक न्याय के नाम पर पिछड़ों एवं दलितों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाओं, शैक्षिक सहायता, सामाजिक सहायता, सरकारी नौकरियों में आरक्षण, सांकेतिक कार्य क्रियान्वित करने का दावा करती रही हैं। उत्तर प्रदेश की राजनीति में सन् 2007 से 2022 तक का काल सामाजिक न्याय एवं जातियों की राजनीति के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। यह वह काल है जब सामाजिक न्याय की राजनीति का दावा करने वाले राजनीतिक दलों की पूर्ण बहुमत की सरकार बनी। लंबे समय से उत्तर प्रदेश में गठबंधन की राजनीति का दौर रहा परन्तु सन् 2007 के विधानसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी को पूर्ण बहुमत मिला। बहुजन समाज पार्टी की स्थापना सन् 1984 में हुई थी परंतु सन् 2007 के पूर्व इसकी पूर्ण बहुमत की सरकार नहीं बन सकी थी। यद्यपि इसके पूर्व इस दल की

N. Kumar 15.4.24

Dinesh Kumar 15.04.24

सरकार गठबंधन के तहत बनी थी।सन् 2007 में पूर्ण बहुमत की सरकार बनने के बाद बीएसपी नेता सुश्री मायावती को सामाजिक न्याय की नीतियों को धरातल पर लागू करने का अवसर प्रदान मिला। सन् 2007 से 2012 तक बीएसपी की सरकार ने अनेक सामाजिक न्याय से संबंधित नीतियों का निर्माण किया है एवं इसे लागू करने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप अनुसूचित जातियों पिछड़ी जातियों के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में बदलाव हुआ। परंतु सन् 2012 के विधानसभा चुनाव में बीएसपी की सरकार पुन: सत्ता में नहीं आ सकी। सन् 2012 में सामाजिक न्याय की राजनीति का दावा करने वाले समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश में पूर्ण बहुमत की सरकार बनायी। श्री अखिलेश यादव उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। सन् 1992 में बनी समाजवादी पार्टी सन् 2012 के पूर्व भी गठबंधन में सरकार का निर्माण किया था परन्तु 2012 में पूर्ण बहुमत की सरकार बनने के बाद उसके पास सामाजिक न्याय की नीतियों को लागू करने का पूर्ण अवसर था। इस अवधि में समाजवादी पार्टी की सरकार ने अनेक कल्याणकारी नीतियों को लागू करने का प्रयास किया परंतु सन् 2017 के विधानसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी एवं समाजवादी पार्टी दोनों की ही सरकार अस्तित्व में नहीं आ सकी। इससे प्रश्न उठता है कि क्या ये दोनों राजनीतिक दल जो सामाजिक न्याय की राजनीति करने का दावा करती है ये अपने शासन काल में इसे धरातल पर लागू करने में विफल रही? सन् 2017 में धर्म को अपनी राजनीति में प्रमुखता देने वाले राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी ने उत्तर प्रदेश में पूर्ण बहुमत की सरकार बनायी। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक न्याय का दावा करने वाले राजनीतिक दलों की नीतियाँ अनुसूचित जातियों एवं अन्य पिछड़ी जातियों की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक अपेक्षाओं को पूर्ण करने में विफल रही। भारतीय जनता पार्टी ने भी सामाजिक न्याय के राजनीति को नवीन आयाम दिया। जहाँ सपा एवं बसपा क्रमश यादव और जाटव जातियों को शासन प्रशासन में प्रमुख भूमिका दिए जाने का आरोप लगाया जाता रहा है तो वहीं भाजपा ने गैर यादव गैर जाटव जातियों को राजनीतिक तौर पर एकजुट करने का प्रयास करती रही। यह महत्वपूर्ण है कि उत्तर प्रदेश के प्रमुख राजनीतिक दल जिस सामाजिक न्याय की स्थापना का दावा करके जातीय राजनीति कर रहे हैं वह वस्तुतः समाज को विभाजन की ओर ले जाने वाली राजनीति प्रतीत होती है।

## साहित्य समीक्षा-

प्रस्तुत अध्ययन के पहले भी उत्तर प्रदेश की राजनीति में जातीय राजनीति एवं सामाजिक न्याय के मध्य संबंध स्थापित करने का प्रयास विभिन्न विद्वानो के द्वारा किया गया। इस संबंध में विभिन्न विद्वानों की कुछ महत्वपूर्ण कृतियों की समीक्षा किया गया है। एम एन श्रीनिवास ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक भारत में जाति' में आधुनिक काल की जनतान्त्रिक प्रक्रिया, प्रशासन एवं शिक्षा में जाति द्वारा अदा की जाने वाली की जाने वाली भूमिका पर प्रकाश डालने की कोशिश की। इस पुस्तक में उन्होंने संस्कृतिकरण एवं पश्चिमीकरण की अवधारणा को अनुभवात्मक अध्ययन के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया। उन्होंने बताया कि भारत में पिछड़ी जातियां सांस्कृतिकरण की ओर उन्मुख हो रही है। तथा उच्च जातियाँ पश्चिमीकरण की ओर आकर्षित हो रहे।

M. Kumar
15.4.24

Dinesh Kumar
15.04.24

रजनी कोठारी ने अपनी पुस्तक 'भारत में राजनीतिक: कल और आज' हिंदी प्रस्तुति एवं संपादन अभय कुमार दुबे' जाति एवं राजनीति के अन्योन्यक्रिया के संबंध में नई अवधारणा को प्रस्तुत किया। उनका मानना है कि राजनीति में जातिवाद के प्रभाव को कुछ विद्वान राजनीति में जातिवाद के संज्ञा देते हैं। परंतु असल में यह जातियों का राजनीतिकरण है। जाति एवं राजनीति दोनों ने एक दूसरे का स्वरूप बदला है। जाति और राजनीति की अंतःक्रिया से समाज परिवर्तन की प्रक्रिया को जन्म दिया तथा इससे समाज का सेकुलरीकरण हुआ है। रूडोल्फ एण्ड रूडोल्फ ने अपनी पुस्तक 'द मॉडर्निटी ऑफ ट्रेडिशन: द पॉलिटिकल डेवलपमेंट इन इंडिया 'में जाति एवं राजनीति में परस्पर अंतःक्रिया का विश्लेषण किया। भारतीय समाज में हो रहे परिवर्तनों को रेखांकित करने का प्रयास किया। उनके अनुसार आधुनिक संस्थाओं के माध्यम से जाति जैसे पारंपरिक संस्था का लोकतांत्रिक पुनर्जन्म हो गया। धीरूभाई सेठ ने अपनी पुस्तक 'सत्ता और समाज' में जाति और राजनीति के मध्य अन्योन्यक्रिया को समझने का प्रयास किया। 'नए मध्यवर्ग' का उदय की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और आधुनिक शिक्षा के प्रसार ने धीरे धीरे जातियों के कर्मकांडीय पक्ष का लोप कर दिया। सामाजिक न्याय की राजनीति ने नए मध्य वर्ग का उदय कर दिया है। जिससे भारतीय लोकतंत्र को एक नयी प्रकृति मिली है। सुधा पाई ने अपनी पुस्तक 'दलित असर्शन एंड द अनफिनिश्ड डेमोक्रेटिक रिवोल्यूसन 'द बहुजन समाज पार्टी इन उत्तर प्रदेश' में दलित जातियों के अभिव्यक्तिकरण में बहुजन समाज पार्टी के योगदान का विश्लेषण किया। यह पुस्तक उत्तर प्रदेश की राजनीति में भी बीएसपी के राजनीतिक एवं समाजिक प्रभाव की चर्चा करती है। रोजर जेफरी एंड जेम्स लर्च के द्वारा संपादित पुस्तक 'सोशल एंड पॉलिटिकल चेंज इन उत्तर प्रदेश' में उत्तर प्रदेश में सामाजिक परिवर्तन की एक समझ विकसित की गई। विभिन्न विद्वानों के द्वारा पिछड़े वर्गों के विकास की स्थितियों के साथ साथ किसान, दलित, महिला आदि के मुद्दों की विश्लेषणात्मक चर्चा की गई। डॉ विवेक कुमार ने अपनी पुस्तक 'बहुजन समाज पार्टी एवं संरचनात्मक परिवर्तन' के अंतर्गत दलितों के राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना में डॉक्टर अंबेडकर, कांशीराम, मायावती की भूमिका को रेखांकित किया। उनका मानना है कि बीएसपी ने दलितों को सामाजिक न्याय दिलाने के साथ ही उनके सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन में संरचनात्मक परिवर्तन किया।

शोध का उद्देश्य-

1.उत्तर प्रदेश में जातीय राजनीति के उद्भव और विकास का अध्ययन करना।

2. उत्तर प्रदेश में जाति एवं राजनीति के संबंधों में राजनीतिक दलों के दृष्टिकोण और जातीय राजनीति के सामाजिक न्याय के विभिन्न पहलुओं अध्ययन करना।

3. उत्तर प्रदेश के प्रमुख राजनीतिक दलों की नीतियों और उनके सामाजिक न्याय के लक्ष्यों की व्याख्या करना।

4. बसपा और सपा की नीतियों के तात्कालिक और दीर्घकालिक प्रभावों का विश्लेषण करना।

M. Kumar
15.4.24

Dinesh Kumar
15.04.24

शोध परिकल्पना:

1.उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी एवं समाजवादी पार्टी की सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों ने विशेष जाति समूहों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर अलग-अलग प्रभाव डाला है।

2. बसपा के उदय के साथ दलित समुदाय को एक नई पहचान और राजनीतिक सशक्तिकरण मिला, वहीं सपा के शासन में अन्य पिछड़े वर्गों को लाभ मिला।

3. उत्तर प्रदेश के प्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के लिए विभिन्न नीतियां और कार्यक्रम लागू किए गये। जिससे शिक्षा और रोजगार में अवसरों की समानता को बढ़ावा दिया मिला।

4. उत्तर प्रदेश के चुनावी राजनीति में जातीय राजनीति ने जातीय अस्मिताओं को नवजीवन प्रदान कर दिया। जिसका प्रयोग राजनीतिक दल सत्ता प्राप्ति में कर रहे हैं।

शोध पद्धति:-

प्रस्तुत शोध प्रबंध में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक एवं अनुभवात्मक पद्धति अपनायी जायेगी। शोध मुख्यत: द्वितीयक स्रोतों पर आधारित होगा। द्वितीयक स्रोतों में जैसे पुस्तक, लेख, समाचार पत्र, पत्रिका कार्यालयी आंकड़े एवं वेबसाइट आदि का उपयोग किया जाएगा।

संभावित परिणाम और योगदान: इस अध्ययन के परिणाम उत्तर प्रदेश में जाति आधारित राजनीति और सामाजिक न्याय नीतियों की प्रभावशीलता को समझने में मदद में मिलेगी। इसका लक्ष्य न केवल अकादमिक दुनिया में बल्कि नीति निर्माताओं के लिए भी नया योगदान प्रदान करना है।

अध्यायीकरण:- प्रस्तुत शोध प्रबंध अध्ययन पांच अध्यायों में किया जाएगा जिसका संभावित अध्यायीकरण इस प्रकार है:-

अध्याय 1: उत्तर प्रदेश में जाति की राजनीतिक भूमिका और सामाजिक न्याय की धारणा

अध्याय 2: बसपा और सपा का संक्षिप्त इतिहास:नेतृत्व विचारधारा एवं कार्यक्रम

अध्याय 3: उत्तर प्रदेश के प्रमुख राजनीतिक दलों का जातीय राजनीति एवं सामाजिक न्याय के संबंध में दृष्टिकोण और नीतियां

अध्याय 4: उत्तर प्रदेश में राजनीतिक प्रक्रिया, जाति और सामाजिक न्याय: एक विश्लेषण

अध्याय 5: निष्कर्ष

Dinesh Kumar
15.04.24

M. Kumar
15.4.24

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-


1. भार्गव, राजीव और अशोक आचार्य (सं०)(2011) . राजनीति सिद्धान्त-एक परिचय डार्लिंग. नई दिल्ली: किंडरस्ले (इंडिया) प्रा० लि०.

2. मंगलानी, डॉ० रूपा.2009. भारतीय शासन एवं राजनीति. जयपुर .राजस्थान :हिन्दी अकादमी.

3. कोठारी, रजनी.2005. 'भारत में राजनीति :कल एवं आज. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

4. सिंह, डॉ० एस०डी०.2011. वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूलतत्व. इन्दौर: कमल प्रकाशन.

5. Hasan, Zoya(ed.).2009. Politics of inclusion: Caste Minorities and affirmative action. New Delhi: Oxford University press,

6. Kothari, Rajani (ed.).2010. 'Caste in Indian Politics', New Delhi: (Second ediiton) blackswan private limited

7. Bose, Sumantra.2013. Transforming India .London: Harvard University Press.


M. Kumar
15.4.24

Dinesh Kumar
15.04.24

8. चौधरी, उमाशंकर (सं०).2012. हाशिये की वैचारिकी. नई दिल्ली :अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा०) लि०.

9. Biswas, Onell .1985. From Justice to welfare. New Delhi: Intellectual publishing house.

10. श्रीनिवास, एम०एन. (2011). आधुनिक भारत में जाति . नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०.

11. Iyer, V.R. Krishna . 1980. 'Some Half- Hidden Aspects of Indian Social Justice, Lucknow : Eastern Book Company.

12. Appadorai, A.1970. Towards A Just Social Order . New Delhi : S.Chands Co.

13. Paswan, Sadanand.2011. Caste Politics and Socioeconomic mobility . New Delhi : Adhyayan publishers & Distributors.

14. श्रीनिवास, एम०एन. 1967. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०.

Article :-

• Brass, Paul R. "Factionalism and the congress party in uttarpreadesh", Asian Servey, Vol-4, No.9 (Sept.1964) Pp.1037- 1047

M. Kumar
15.4.24

Dinesh Kumar
15.04.24

• Mehrotra, Santosh, "Well-being and caste in Uttar Pradesh". Economic and political weekley, Pp 61-71, October 7, 2006.

• Verma, A.K., "Uttar Pradesh : Caste and Political Mobilisation" Economic and political weekely, Pp. 63-66, December 18,2004.

• Pai, Sudha, "Uttar Pradesh in the 1990's" Economic and Political weekley, Pp. 44-46, May 21, 2005

• Jaffrelot, Christophe and Gilles Verniers, "Caste, Communities and Parties in Uttar Pradesh", Economic and Political weekley, Vol. XLVII No. 32, Pp. 89-93, August 11, 2012

शोध पर्यवेक्षक

शोधार्थी

Dr Manoj Kumar
Assista Professor
Univ. Dept. of Pol. Sc.
L.M.N.U. Darbhanga

Head
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga